IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लोकसभा चुनावो में महिलाओं की स्थिति (राजस्थान के संदर्भ में 1952–2024 तक)

Status of women in Lok Sabha elections (in the context of Rajasthan from 1952-2024)

Author – Dr. Shalini Purohit, Assistant Professor-Guest Faculty - Political Science, Govind Guru Tribal University, Banswara, Rajasthan

Abstract : लोकसभा चुनावों में महिलाओं की भागीदारी भारत में लोकतांत्रिक सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहलू रही है। राजस्थान के संदर्भ में 1952 से 2024 तक महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी, उम्मीदवारों की संख्या, निर्वाचित महिला सांसदों, महिला मतदाताओं की भागीदारी, एवं सरकारों की नीतियों का गहन अध्ययन आवश्यक है। 1952 से प्रारंभिक चुनावों में महिलाओं की भागीदारी सीमित थी, लेकिन समय के साथ इसमें सकारात्मक वृद्धि देखी गई। 1990 के दशक के बाद महिला सशक्तिकरण आंदोलनों, पंचायती राज में 33% आरक्षण और बढ़ती सामाजिक जागरूकता ने महिलाओं को राजनीति में अधिक सक्रिय किया। 21वीं सदी में, विशेष रूप से 2014 और 2019 के चुनावों में, राजस्थान में महिला उम्मीदवारों की संख्या बढ़ी, और कई प्रमुख महिलाएं संसदीय राजनीति में उभरकर आईं। हालांकि, 2024 तक भी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और संसद में उनका प्रतिनिधित्व पुरुषों की तुलना में काफी कम है। महिला आरक्षण विधेयक, राजनीतिक दलों की नीतियाँ, और सामाजिक–सांस्कृतिक कारक इस स्थिति को प्रभावित करते रहे हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान में महिलाओं की चुनावी स्थिति का विश्लेषण कर लोकतांत्रिक भागीदारी को बढ़ावा देने के उपायों पर विचार करना है।

Keywords : राजस्थान, लोकसभा चुनाव, महिला प्रतिनिधित्व, राजनीतिक भागीदारी, महिला सशक्तिकरण, महिला उम्मीदवार, निर्वाचित महिला सांसद, महिला मतदाता, आरक्षण, चुनावी प्रवृत्ति, सामाजिक जागरूकता, नीतिगत प्रभाव, लैंगिक समानता, राजनीतिक दल, लोकतांत्रिक सशक्तिकरण, महिला आरक्षण विधेयक, संसदीय भागीदारी, चुनावी सुधार, निर्वाचन प्रक्रिया, राजनीतिक सक्रियता।

Article : लोकतंत्र की सफलता में महिलाओं की भागीदारी एक महत्वपूर्ण कारक होती है, क्योंकि यह समाज में लैंगिक समानता और समावेशी विकास को दर्शाता है। भारत के लोकसभा चुनावों में महिलाओं की भागीदारी धीरे–धीरे बढ़ी है, लेकिन अब भी यह अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँची है। राजस्थान, जो ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण राज्य है, में महिलाओं की चुनावी भागीदारी का विश्लेषण करना आवश्यक है। 1952 में हुए पहले आम चुनावों से लेकर 2024 तक, महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी विभिन्न चरणों से गुजरी है। प्रारंभ में महिलाओं की उपस्थिति नगण्य थी, क्योंकि समाज में पारंपरिक सोच और सामाजिक प्रतिबंधों के कारण वे राजनीति में सक्रिय रूप से भाग नहीं ले पाती थीं। हालांकि, समय के साथ शिक्षा, सामाजिक जागरूकता, सरकारी योजनाओं और महिला सशक्तिकरण आंदोलनों के कारण महिलाओं की भूमिका में धीरे–धीरे परिवर्तन आया। राजस्थान में महिला उम्मीदवारों की संख्या, उनके जीतने की दर, मतदाता के रूप में महिलाओं की भागीदारी, और राजनीतिक

दलों द्वारा महिलाओं को दिए जाने वाले अवसर इस विषय के महत्वपूर्ण पहलू हैं। 1990 के दशक के बाद, जब पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण लागू किया गया, तब राजनीति में उनकी भागीदारी बढ़ने लगी। हालांकि, लोकसभा में महिलाओं की स्थिति अब भी पुरुषों की तुलना में कमजोर बनी हुई है। राजस्थान में महिला प्रतिनिधित्व की स्थिति का अध्ययन करते समय यह समझना आवश्यक है कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक बाधाएँ अब भी महिलाओं की पूर्ण भागीदारी में बाधक बनी हुई हैं। महिलाओं को राजनीति में समान अवसर देने, उनके लिए सुरक्षित वातावरण बनाने और संसाधन उपलब्ध कराने की आवश्यकता है, जिससे वे प्रभावी रूप से लोकसभा चुनावों में अपनी भूमिका निभा सकें। यह अध्ययन 1952 से 2024 तक राजस्थान में महिलाओं की चुनावी भागीदारी के रुझानों, उनकी चुनौतियों और संभावित सुधारों पर केंद्रित है, जिससे लोकतंत्र को और अधिक समावेशी तथा सशक्त बनाया जा सके।

राजस्थान की महिला सांसद 1952 – 2024 तक

क्र.सं.	लोकसभा चुनाव वर्ष	लोकसभा सांसद का नाम	लोकसभा सांसद क्षेत्र	पार्टी का नाम
1	1962–67	गायत्री देवी	जयपुर	स्वतंत्र पार्टी
2	1967–70	गायत्री देवी	जयपुर	स्वतंत्र पार्टी
3	1971–77	गायत्री देवी	जयपुर	स्वतंत्र पार्टी
4	1971–77	राजमाता कृष्णा कुमारी	जोधपुर	निर्दलीय
5	1980–84	निर्मला कुमारी	चित्तौड़गढ़	कांग्रेस
6	1984–89	निर्मला कुमारी	चित्तौड़गढ़	कांग्रेस
7	1984–89	इंदुबाला सुखाड़िया	उदयपुर	कांग्रेस
8	1989–91	वसुंधरा राजे सिंधिया	झालावाड़	भाजपा
9	1991–96	वसुंधरा राजे सिंधिया	झालावाड़	भाजपा
10	1991–96	गिरिजा व्यास	उदयपुर	कांग्रेस
11	1991–96	कृष्णेन्द्र कौर (दीपा)	भरतपुर	कांग्रेस
12	1996–98	वसुंधरा राजे सिंधिया	झालावाड़	भाजपा
13	1996–98	महारानी विद्या सिंह	भरतपुर	भाजपा
14	1996–98	गिरिजा व्यास	उदयपुर	कांग्रेस
15	1996–98	उषा मीणा	सवाई माधोपुर	कांग्रेस
16	1996–98	राजकुमारी रत्ना सिंह	प्रतापगढ़	कांग्रेस
17	1998–99	वसुंधरा राजे सिंधिया	झालावाड़	भाजपा
18	1998–99	प्रभा ठाकुर	अजमेर	कांग्रेस
19	1998–99	उषा मीणा	सवाई माधोपुर	कांग्रेस
20	1999–2004	वसुंधरा राजे सिंधिया	झालावाड़	भाजपा
21	1999–2004	गिरिजा व्यास	उदयपुर	कांग्रेस
22	1999–2004	जसकौर मीणा	सवाई माधोपुर	भाजपा
23	1999–2004	राजकुमारी रत्ना सिंह	प्रतापगढ़	कांग्रेस
24	2004–2009	किरण माहेश्वरी	उदयपुर	भाजपा
25	2004–2009	सुशीला	जालौर	भाजपा
26	2009–2014	गिरिजा व्यास	चित्तौड़गढ़	कांग्रेस
27	2009–2014	चन्द्रेश कुमारी कटोच	जोधपुर	कांग्रेस
28	2009–2014	राजकुमारी रत्ना सिंह	प्रतापगढ़	कांग्रेस
29	2009–2014	डॉ. ज्योति मिर्धा	नागौर	भाजपा
30	2014–2019	संतोष अहलावत	झूंझनु	भाजपा
31	2019–2024	जसकौर मीणा	दौसा	भाजपा
32	2019–2024	राजकुमारी दीया	राजसमंद	भाजपा
33	2019–2024	रंजीता कौली	भरतपुर	भाजपा
34	2024–वर्तमान तक	संजना जादव	भरतपुर	कांग्रेस
35	2024–वर्तमान तक	मंजु शर्मा	जयपुर शहर	भाजपा

चुनौतियां और बाधाएं – राजस्थान में लोकसभा चुनावों में महिलाओं की भागीदारी धीरे–धीरे बढ़ी है, लेकिन अब भी यह पुरुषों की तुलना में काफी कम है। महिलाओं के चुनाव लड़ने और जीतने की दर अपेक्षाकृत कम होने के पीछे कई सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाएँ हैं। इन बाधाओं को समझे बिना महिलाओं के पूर्ण राजनीतिक सशक्तिकरण की दिशा में प्रभावी नीतियाँ बनाना संभव नहीं है।

सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ – राजस्थान में अब भी पारंपरिक पितृसत्तात्मक समाज मौजूद है, जहाँ महिलाओं की भूमिका को मुख्यतः घरेलू कार्यों तक सीमित माना जाता है। राजनीति को पुरुषों का क्षेत्र समझा जाता है, और महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में कम अवसर दिए जाते हैं। हालांकि शिक्षा दर में वृद्धि हुई है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी कई महिलाएँ उच्च शिक्षा से वंचित हैं। राजनीतिक प्रक्रियाओं और अधिकारों के प्रति कम जानकारी होने के कारण वे चुनावों में सक्रिय भागीदारी नहीं कर पातीं। महिलाओं को राजनीति में आने के लिए पारिवारिक समर्थन की आवश्यकता होती है, जो अक्सर उन्हें नहीं मिलता। राजनीतिक जीवन को संघर्षपूर्ण और अनिश्चित माना जाता है, जिससे परिवार की सहमति प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

राजनीतिक बाधाएँ – राजस्थान में अधिकांश राजनीतिक दल महिलाओं को सीमित संख्या में ही टिकट देते हैं। यह देखा गया है कि अधिकांश टिकट प्रभावशाली परिवारों से आने वाली महिलाओं को दिए जाते हैं, जबकि आम महिलाओं के लिए अवसर सीमित रहते हैं। राजनीति में सफलता के लिए मजबूत नेटवर्क, वित्तीय संसाधन और समर्थन की आवश्यकता होती है। अधिकांश महिलाएँ चुनाव लड़ने के लिए आवश्यक आर्थिक संसाधन नहीं जुटा पातीं और पुरुषों की तुलना में पार्टी नेतृत्व का समर्थन भी कम मिलता है। हालांकि पंचायती राज में महिलाओं के लिए आरक्षण उपलब्ध है, लेकिन लोकसभा और विधानसभा चुनावों में ऐसा कोई आरक्षण नहीं है। इससे महिलाओं को राजनीति में प्रवेश करने और टिकाऊ करियर बनाने में कठिनाई होती है। लोकसभा चुनावों में प्रचार, जनसंपर्क और अन्य खर्चों के लिए भारी मात्रा में धन की आवश्यकता होती है। अधिकांश महिलाओं के पास इतने आर्थिक संसाधन नहीं होते, जिससे वे चुनावी राजनीति में पीछे रह जाती हैं। कई महिलाएँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं होतीं, और उनके आर्थिक निर्णयों पर परिवार या पुरुषों का नियंत्रण होता है। इससे उन्हें राजनीति में प्रवेश करने और स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने में बाधा आती है।

प्रशासनिक और कानूनी बाधाएँ – महिलाओं को चुनाव लड़ने में कई प्रशासनिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जैसे नामांकन प्रक्रिया की जटिलता, कानूनी दांव–पेंच, और राजनीतिक दांव–पेंच, जिनसे निपटना कई बार मुश्किल हो जाता है। चुनावी राजनीति में कई बार हिंसा और धमकियों का माहौल बनता है, जिससे महिलाएँ भयभीत होकर चुनाव लड़ने से बचती हैं। राजनीतिक जीवन में महिलाओं को मानसिक, सामाजिक और शारीरिक सुरक्षा की आवश्यकता होती है, जो अभी भी पूरी तरह सुनिश्चित नहीं है।

महिला मतदाताओं से जुड़ी चुनौतियाँ – ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी कई महिलाएँ स्वतंत्र रूप से मतदान नहीं कर पातीं। उनके परिवार या समुदाय के पुरुष सदस्य उनके लिए मतदान का निर्णय लेते हैं, जिससे उनकी स्वतंत्र राजनीतिक सोच विकसित नहीं हो पाती। हालांकि महिला मतदाताओं की संख्या बढ़ रही है, लेकिन उनमें से कई को राजनीतिक दलों, उम्मीदवारों और नीतियों की पूरी जानकारी नहीं होती। इससे वे जागरूक मतदाता के रूप में अपनी भूमिका को पूरी तरह नहीं निभा पातीं।

समाधान – इन चुनौतियों को दूर करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं:
राजनीतिक दलों द्वारा अधिक महिलाओं को टिकट देना और उनके लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना। महिला आरक्षण विधेयक को लागू करना, जिससे लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं के लिए आरक्षित सीटें सुनिश्चित की जा सकें। महिलाओं की शिक्षा और राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने के लिए अभियान चलाना और उन्हें नेतृत्व के लिए प्रेरित करना। राजनीति में महिलाओं के लिए वित्तीय सहायता और

प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करना, जिससे वे चुनाव लड़ने के लिए आर्थिक रूप से सक्षम बन सकें। चुनावी प्रक्रिया को अधिक सुरक्षित और महिलाओं के अनुकूल बनाना, जिससे वे बिना किसी भय के राजनीति में सक्रिय हो सकें। राजस्थान में लोकसभा चुनावों में महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए इन चुनौतियों का समाधान करना अनिवार्य है। सामाजिक जागरूकता, राजनीतिक इच्छाशक्ति, और प्रभावी सरकारी नीतियाँ ही महिलाओं की राजनीति में भागीदारी को सशक्त बना सकती हैं। जब तक महिलाओं को समान अवसर और समर्थन नहीं मिलता, तब तक राजनीति में उनकी पूरी भागीदारी सुनिश्चित नहीं की जा सकती।

सफलता की कहानियाँ – राजस्थान की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी धीरे–धीरे बढ़ी है, और कई महिला नेताओं ने अपने नेतृत्व, संघर्ष और सेवा भावना से लोकसभा में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। 1952 से 2024 तक, कई महिलाओं ने सामाजिक और राजनीतिक बाधाओं को पार करते हुए अपनी पहचान बनाई और राज्य का प्रतिनिधित्व किया। ये सफलता की कहानियाँ न केवल प्रेरणादायक हैं, बल्कि यह भी दर्शाती हैं कि यदि महिलाओं को अवसर मिले, तो वे राजनीति में भी उल्लेखनीय योगदान दे सकती हैं।

कृष्णा कुमारी (जोधपुर, 1952) – राजस्थान की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का पहला उदाहरण 1952 के लोकसभा चुनावों में देखने को मिला, जब कृष्णा कुमारी ने जोधपुर सीट से चुनाव जीतकर लोकसभा में प्रवेश किया। वह स्वतंत्र भारत के शुरुआती महिला सांसदों में से एक थीं और उनके योगदान ने आगे की महिला पीढ़ी को राजनीति में आने के लिए प्रेरित किया।

शीशराम ओला और सुमित्रा सिंह की प्रेरणादायक कहानी (1970–1990) – हालांकि शीशराम ओला स्वयं पुरुष नेता थे, लेकिन उन्होंने राजस्थान में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में भूमिका निभाई। इसी दौर में सुमित्रा सिंह ने राजनीति में कदम रखा और अपनी मेहनत और दूरदर्शिता से विधानसभा और लोकसभा में अपनी पहचान बनाई। वे बाद में राजस्थान विधानसभा की पहली महिला अध्यक्ष भी बनीं, जिससे यह साबित हुआ कि महिलाएँ शीर्ष नेतृत्व में भी सफल हो सकती हैं।

वसुंधरा राजे – राजस्थान की पहली महिला मुख्यमंत्री और लोकसभा सांसद – वसुंधरा राजे राजस्थान की पहली महिला मुख्यमंत्री बनने से पहले लोकसभा की एक प्रभावशाली सांसद थीं। 1989 में पहली बार लोकसभा चुनाव जीतने के बाद, उन्होंने 1991, 1996, 1998 और 1999 में भी चुनाव जीतकर अपनी राजनीतिक पकड़ मजबूत की। लोकसभा में उनके योगदान, केंद्रीय मंत्री के रूप में उनकी भूमिका और राजस्थान की राजनीति में उनके नेतृत्व ने राज्य में महिला सशक्तिकरण को नई दिशा दी।

जसकौर मीना – आदिवासी समुदाय की आवाज – जसकौर मीना, जो कि राजस्थान के आदिवासी समुदाय से ताल्लुक रखती हैं, ने अपनी राजनीतिक यात्रा में कई चुनौतियों का सामना किया। वह 1999 और 2004 में दौसा लोकसभा सीट से चुनी गईं और महिलाओं व आदिवासियों के मुद्दों को संसद में उठाने में अग्रणी भूमिका निभाई। उनकी सफलता ने यह दिखाया कि हाशिए पर रहने वाले समुदायों की महिलाएँ भी राजनीति में प्रभावी भूमिका निभा सकती हैं।

संतोष औजा और किरण माहेश्वरी – नई पीढ़ी की प्रभावशाली नेता – संतोष औजा और किरण माहेश्वरी राजस्थान की उन महिला नेताओं में शामिल हैं, जिन्होंने लोकसभा चुनावों में जीत दर्ज कर अपनी नेतृत्व क्षमता साबित की। किरण माहेश्वरी 2004 में अजमेर से सांसद बनीं और उन्होंने महिला सशक्तिकरण व शिक्षा के क्षेत्र में कई अहम मुद्दे उठाए।

दीया कुमारी – आधुनिक राजनीति में महिला नेतृत्व – राजस्थान की शाही परिवार से ताल्लुक रखने वाली दीया कुमारी 2019 के लोकसभा चुनावों में राजसमंद सीट से निर्वाचित हुईं। उन्होंने न केवल अपने सामाजिक कार्यों से जनता का विश्वास जीता, बल्कि महिला नेतृत्व के नए मानक भी स्थापित किए।

2019 और 2024 में महिला सांसदों की बढ़ती संख्या – हाल के वर्षों में राजस्थान से लोकसभा के लिए निर्वाचित होने वाली महिला सांसदों की संख्या बढ़ी है। 2019 में राजस्थान से चार महिला सांसद

लोकसभा पहुंचीं, जो यह दर्शाता है कि धीरे–धीरे ही सही, लेकिन राजनीति में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती जा रही है।

राजस्थान में महिलाओं की सफलता की ये कहानियाँ यह दर्शाती हैं कि सामाजिक और राजनीतिक बाधाओं के बावजूद महिलाएँ जब अवसर प्राप्त करती हैं, तो वे न केवल चुनाव जीत सकती हैं बल्कि प्रभावी नेतृत्व भी प्रदान कर सकती हैं। हालांकि, अब भी महिला प्रतिनिधित्व पुरुषों की तुलना में काफी कम है, लेकिन इन सफलताओं ने आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। यदि राजनीतिक दल महिलाओं को अधिक अवसर दें और समाज उन्हें समर्थन प्रदान करे, तो आने वाले वर्षों में राजस्थान की राजनीति में और अधिक महिलाएँ अपनी सफलता की कहानियाँ लिख सकती हैं।

निष्कर्ष : राजस्थान में 1952 से 2024 तक लोकसभा चुनावों में महिलाओं की स्थिति में धीरे–धीरे सुधार हुआ है, लेकिन यह अब भी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँची है। प्रारंभिक चुनावों में महिलाओं की भागीदारी नाममात्र थी, लेकिन सामाजिक जागरूकता, शैक्षिक सुधार, महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों और राजनीतिक आरक्षण जैसी नीतियों के कारण महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता बढ़ी है। हालांकि, आज भी महिलाओं की लोकसभा में प्रतिनिधित्व दर पुरुषों की तुलना में काफी कम बनी हुई है। महिला उम्मीदवारों की संख्या में वृद्धि तो हुई है, लेकिन राजनीतिक दलों द्वारा उन्हें सीमित संख्या में ही टिकट दिए जाते हैं। इसके अलावा, सामाजिक–पारिवारिक दबाव, संसाधनों की कमी, और पितृसत्तात्मक मानसिकता जैसी बाधाएँ अब भी मौजूद हैं। अतः, राजस्थान में महिलाओं के चुनावी प्रतिनिधित्व को और अधिक सशक्त करने के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है।

References :

1. संसद अनुसंधान प्रकोष्ठ (PRS Legislative Research) – महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और महिला सांसदों से जुड़ी जानकारी। https://prsindia-org
2. राम, डॉ. पपली, भारतीय राजनीति में महिला सहभागिता एंव राजनीतिक चेतना www.advancedjournal.com
3. महला, डॉ. अरविन्द, कटारिया, डॉ. सुरेन्द्र, 'भारत में महिला स"ाक्तिकरणः प्रयास एंव बाधाएं,' मलिक एण्ड कम्पनी, जयपुर एंव दिल्ली,
4. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार – महिला सशक्तिकरण और राजनीति में महिलाओं की भागीदारी से संबंधित नीतियाँ और पहल। https://wcd-nic-in
5. भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका – विभिन्न लेखकों द्वारा संपादित।
6. राजस्थान की राजनीति का इतिहास – राजस्थान के चुनावी परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की भूमिका पर शोध।